(नुबूव्वत -दूतत्व- के साक्ष्य) तथा (नुबूव्वत के चिह्न)	(دلائل النبوية) و (أعلام النبوية)
पवित्र क़ुरआन	القرآن الكريم
यह़या बिन अकस़म कहते हैं: मामून के शासनकाल में उनके पास मुनाज़रह की एक मजलिस -अर्थात विचार परिषद- थी, एक दिन उसमें कुछ लोगों के साथ उत्तम वस्त्र धारण किये हुये रूपवान तथा सुगंध लगाये हुये एक यहूदी आया। वह कहते हैं कि: जब उसने वार्तालाप करना आरंभ किया तो भाषा पर उसकी अच्छी पकड़ का भी अंदाज़ा हुआ। वह कहते हैं कि: सभा जब समाप्त हुई तो मामून ने उसे बुलाया तथा पूछा कि: क्या तुम इस्राईली अर्थात यहूदी हो ? तो उसने कहा: हाँ। मामून ने उससे कहा: यदि तुम इस्लाम धर्म स्वीकार कर लो तो मैं तुम्हारे लिये अमूक कार्य कर दूँगा, तुम्हें अमूक लाभ पहुँचाऊँगा, इस्लाम स्वीकार कर लेने की स्थिति में मामून ने उसे भलाई पहुँचाने का वादा किया। यहूदी ने कहा: नहीं, बल्कि, मैं अपने धर्म तथा अपने पिता के धर्म पर चलूँगा। फिर वह चला गया। वह कहते हैं कि: एक वर्ष के पश्चात वही यहूदी हमारे पास मुसलमान के रूप में आया। उनका कहना है कि: उसने फ़िक़्ह (धर्म शास्त्र) एवं ह़दीस़ के विषय में उत्तम ढ़ंग से अपनी बात रखी, सभा जब समाप्त हुई तो मामून ने उसे बुलाया और कहा: क्या तुम वही व्यक्ति नहीं हो जिससे कुछ दिनों पहले मेरी भेंट हुई थी ? उसने कहा: हाँ। तो मामून ने पूछा कि: तुम्हारे इस्लाम धर्म स्वीकार करने का कारण क्या है?	قال يحي بن أكثم: كان للمأمون وهو أمير إذ ذاك مجلس نظر – أي مجلس مناظرات- فدخل في جملة الناس رجل يهودي حسن الثوب حسن الوجه طيب الريح. قال: فتكلم فأحسن العبارة. قال: فلما انفض المجلس دعاه المأمون فقال له: اسرائيلي انت –يعني يهودي-؟. قال: نعم. قال: له أسلم حتى أفعل بك وأصنع لك، ووعده المأمون خيرا إن أسلم. فقال اليهودي: بل ديني ودين آبائي. ثم انصرف. قال: فلما كان بعد سنة جاءنا اليهودي مسلما. قال: فتكلم في الفقه والحديث فأحسن الكلام فلما انفض المجلس. دعاه المأمون وقال: له ألست صاحبنا بالأمس؟ قال: بلى. قال: فما سبب إسلامك. قال اليهودي: اسمع وقل الله اكبر، انصرفت من مجلسك في ذاك اليوم فأحببت ان امتحن هذه الاديان وأنا احسن الخط – يعني اجيد الكتابة- فعمدت إلى التوراة فكتبت ثلاث نسخ فزدت فيها ونقصت منها وادخلتها

الكنيسة فاشتريت مني ولم يكلفوا انفسهم أن يقرؤوها أو يراجعوها ثم عمدت إلى الإنجيل فكتبت ثلاث نسخ فزدت فيها وانقصت منها وادخلتها البيعة –معابد اليهود- فاشتريت مني ولم يقرؤوها أو يراجعوها ثم عمدت إلى القرآن فكتبت ثلاث نسخ وأدخلتها إلى الوراقين قالوا لا نقبلها حتى نقرأها ونراجعها فاكتشفوا أخطاءها واكتشفوا الزيادة والنقصان فقاموا واحرقوها وكادوا يقتلونني فعلمت أن هذا كتاب محفوظ من الله فكان هذا سبب إسلامي.	यहूदी ने उत्तर देते हुये कहाः सुनें एवं अल्लाहु अकबर (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहें, उस दिन जब मैं आपके परिषद से वापस गया तो मैंने इन धर्मों को जाँचने का इरादा बनाया, तथा मैं बड़े उत्तम ढ़ंग से लिखना जानता हूँ, अतः मैंने तौरात लेकर उसकी तीन प्रतियाँ अपने हाथों से लिखीं और उसमें अपनी ओर से कुछ कमी-वृद्धि कर दी, तथा उसे गिरजा घर में रख दिया, तो लोगों ने इसे मुझ से खरीदा और उन्होंने इसे पढ़ने का या इसकी समीक्षा करने का कदापि प्रयास नहीं किया, इसके पश्चात मैंने इंजील (बाइबिल) लेकर इसकी तीन प्रतियाँ लिखीं तथा इसमें अपनी ओर से जोड़-घटाव किया और इसे बीआ अर्थात सिनेगॉग (आराधनालय) में रख दिया, तो लोगों ने इसे मुझ से खरीदा और इसे पढ़ने या इसकी समीक्षा करने का कदापि प्रयास नहीं किया, इसके बाद मैंने क़ुरआन की तीन प्रतियाँ अपने हाथों से तैयार कीं और इसमें कुछ घटा बढ़ा दिया, फिर इसे काग़ज़ बेचने वालों के पास रख दिया, तो उन लोगों ने कहा किः हम इसे उस समय तक स्वीकार नहीं करेंगे जब तक इसे पढ़ न लें एवं इसकी समीक्षा न कर लें, उन लोगों ने इसकी गलतियों को पकड़ लिया तथा इसमें जोड़े एवं घटाये गये स्थानों को भी चिह्नित कर लिया, अतः उन लोगों ने उन प्रतियों को जला दिया तथा मुझे भी जान से मारने का प्रयास किया, तब मुझे पता चल गया कि यह अल्लाह के द्वारा संरक्षित पुस्तक है, और यही मेरे इस्लाम धर्म स्वीकार करने का कारण बना।